



गांधीजीके पावन प्रसंग

२



लेखक

लल्लुभाई मकनजी

अनुवादक

सोमेश्वर पुरोहित

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर

अहमदाबाद - १४

आशीर्वचन

बापूका जीवन तो महासागर है | जो आदमी थोड़ी देरके लिए भी उनके सम्पर्कमें आता है, उसके लिए और दूसरोंके लिए भी वह सम्पर्क चिरस्मरणीय बन जाता है | बापूके जीवनके सम्बन्धमें अनगिनत लेख और असंख्य पुस्तकें लिखी गयी हैं, लिखी जा रही है और आगे भी लिखी जायेंगी | उन सबमें बापूकी विराट विभूतिके असंख्य जीवन-प्रसंग अलग अलग बिखरे पड़े होते हैं | लेकिन बापूके जीवन-कार्यको और उसके साथ जुड़े हुए उनके सम्पूर्ण जीवन-दर्शनको उसके पूरे अर्थमें समझ लेना कोई आसान काम नहीं है |

गांधी-साहित्यके अभ्यासियोंमें बापूके जीवनकी दृष्टिको समझनेकी स्वाभाविक पकड़ होनी चाहिये | तभी उन्हें गांधीजीके जीवनका सच्चा दर्शन हो सकता है | पावन प्रसंगोंके लेखक श्री लल्लुभाईमें यह पकड़ आती जा रही है | इसलिए उनके लिखे हुए ये सरल सुबोध प्रसंग बापूके जीवनके विविध पहलुओंका सच्चा और प्रभावकारी दर्शन कराते हैं | बापूका विशाल हृदय और वेधक दृष्टि जीवन और जगतके छोटे-मोटे सारे पहलुओंको समझकर उसके पीछे रहे सनातन सत्यको कितनी सरलतासे प्रकट कर देते हैं ? बापूके ये सारे प्रसंग जीवन और जगतको पावन करनेवाले हैं | ये पावन प्रसंग हमारे जीवनको सदा जाग्रत और प्रगतिशील बनाये रखनेकी अखूट प्रेरणा प्रदान करते हैं |

ऐसे पावन प्रसंगोंकी ये पुस्तिकायें किसी भी भाषाके साहित्यमें अपना स्वाभाविक स्थान प्राप्त कर सकती हैं |

हम आशा करें कि लेखक बापूके जीवनके ऐसे अनेक पहलू हमारे सामने रखते रहेंगे |

गांधी कुटीर,

दिलखुश दीवानजी

कराडी, १३-१-१९७५



अनुक्रमणिका

आशीर्वचन

१. बच्चों के बापू
२. भक्ति और श्रमकी प्रसादी
३. मेरा सर भी ले लो !
४. गांधीकथा कहनेवाले लिफाफे
५. बा और बापूका विनोद
६. बंकिधम महलमें
७. जमानत – जायदादकी या सद्भावकी?
८. ये पैसे मेरे है !



१

बच्चोंके बापू



गांधीजीका जीवन बालकों जैसा निर्दोष, सरल और निष्पाप था | जब वे बालकोंके बीच बैठे होते या उनके साथ घूमते थे, उस समय किसीको ऐसा लगता ही नहीं था कि वे महात्मा हैं | राष्ट्रके और दुनियाके कठिन सवालोंनेका बोझ हमेशा उनके सिर पर रहता था, फिर भी बालकोंके बीच वे सदा आनन्दी और हंसमुख ही दिखाई देते थे |

शामके समय घूमने जानेका गांधीजीका अटल नियम था | उस समय बालक उनके साथ अवश्य होते थे | गांधीजी उनके साथ विनोद करनेका मौका कभी हाथसे जाने न देते थे |

हमेशाकी तरह गांधीजी एक शामको घूमने निकले | उनके साथ एक महिला अपने छोटे बच्चेको हाथमें लिये घूम रही थी | उसका दूसरा बच्चा भी उसके पीछे-पीछे चल रहा था | घूमते घूमते उस महिलाके हाथका बच्चा रोने लगा | माताने उसे चुप करनेके लिए अपनी सारी कला आजमा देखी, लेकिन बच्चा रोता ही रहा ! इसलिए गांधीजीका ध्यान उस ओर गया | एक दूसरे अन्तेवासीको अपनी लकड़ी देकर गांधीजीने मांके हाथसे बच्चेको अपने हाथमें ले लिया | बच्चेके कोमल गाल पर उन्होंने प्यारसे अपना हाथ फिराया और प्रेमभरी आंखोंसे बच्चेकी ओर देख कर हंसने लगे | बच्चा शांत हो गया और गांधीजीकी प्यार बरसानेवाली आंखोंमें आंखें डालकर इस तरह हंसने लगा, मानो उनके वात्सल्यका उत्तर दे रहा हो | मातृत्वका ऐसा उदार गुण गांधीजीमें है, यह जान कर वह महिला आश्चर्यसे



मुग्ध होकर गांधीजीकी ओर देखने लगी | इतनेमें पीछे-पीछे चलनेवाला दूसरा बालक गांधीजीके पास दौड़ता आया और उनका हाथ पकड़ कर खिले हुए फूलोंके पास उन्हें खींचकर ले गया | फूलोंके पास जा कर वह बोला : “बापू, ये फूल कितने सुन्दर हैं !”

गांधीजी – हां बेटा, बहुत ही सुंदर फूल हैं |

इतनेमें वहांसे गुजरनेवाले एक कुत्तेकी ओर उस बालकका ध्यान गया | वह बोल उठा – बापू, देखिये वह कुत्ता जा रहा है |

गांधीजी – हां, मैंने कुत्ता देखा |

बालक – (कुतूहलसे) बापू, उसके पूंछ भी है !

गांधीजी – ओ हो ! उसके पूंछ भी है ! तेरी पूंछ है कि नहीं ?

गांधीजीके इस अज्ञान पर मानो हंसता हुआ बालक बोला, “बापू, आप तो बहुत बड़े हो गये हैं | आप इतना भी नहीं जानते कि आदमीके पूंछ नहीं होती ? आप तो कुछ भी नहीं जानते |”

गांधीजीके बारेमें बालककी यह राय सुन कर सारी मंडली हंस पड़ी |

* * * * *

आश्रममें भी बालक कई बार गांधीजीको आकर घेर लेते थे | कभी कभी तो वे गांधीजीसे गहरे तात्त्विक प्रश्न भी पूछ बैठते थे | लेकिन यह सारा विनोद गांधीजी घूमने जाते तभी खास तौर पर चलता था | एक बार घूमते घूमते एक बालकने सवाल किया : बापू, एक सवाल पूछूं?”

गांधीजी – जरूर पूछ |

बालक – अहिंसाका अर्थ दूसरोंको दुःख न देना होता है ?

गांधीजी – हां, ऐसा ही होता है |

बालक – आप हंसते हंसते हमारे गाल पर चुटकी भर लेते हैं, यह हिंसा है या अहिंसा ?

“वाह रे तेरी होशियारी |” कह कर गांधीजी हंस पड़े और उसके गाल पर एक जोरकी चुटकी भरी |

“अरे, बापू चिढ़ गये, बापू चिढ़ गये !” कह कर बच्चे तालियां बजा बजा कर हंसने लगे | बालकोंके इस हास्यमें विश्ववंद्य महात्माने भी अपना हास्य मिला दिया !

* * * * *



इस प्रकार गांधीजी बालकोंके साथ हंसते, घूमते और आनंद अनुभव करते थे | बालक कभी कभी गांधीजीको अपने खेलकूदमें भी खींच ले जानेमें सफल हो जाते थे |

एक बार बालकोंका दल गांधीजीके पास आकर कहने लगा : “बापू, आज आपको नदीमें तैरनेके लिए हमारे साथ आना पड़ेगा |”

दूसरा बालक – आज बापूको साथमें लिये बिना हम यहांसे हटेंगे ही नहीं |

तीसरा बालक – लेकिन बापू तैरना भूल गये होंगे |

चौथा बालक – अरे तैरना कहीं भूला जाता है ! बापू, आपको तैरना आता है ? आज हमें देखना है कि आप कैसे तैरते हैं |

बाल-मंडलीकी ऐसी बातें सुनकर गांधीजी हंसने लगे |

“बापू, हंसनेसे काम नहीं चलेगा ! आज तो आपको हमारे साथ आना ही पड़ेगा |” एक बालकने कहा |

और बालकोंने अपने प्रेमका इतना दबाव गांधीजी पर डाला कि आखिर वे साबरमतीमें नहाने जानेके लिए तैयार हो गये | बालक आनन्दसे नाचने-कूदने लगे | उनके हर्षका पार न रहा |

संसारके वैर-द्वेष और कटुतासे अछूते, निर्दोष और निष्कपट बालकोंसे घिरे हुए सन्त पुरुष नदीकी तरफ जा रहे थे | सन्तके चरण-स्पर्शसे नदी मानो धन्यताका अनुभव कर रही हो इस प्रकार कल्लोल करती हुई बह रही थी |

बालकोंके साथ गांधीजी नदीमें कूदे | वे तैरने लगे और देखते ही देखते सौ दो सौ गज आगे बढ़ गये | बालकोंके संतोष और आनन्दके खातिर ही वे नदीमें तैरने आये थे |

ऐसे प्रेमल और वात्सल्यमय थे हमारे गांधी बापू !

* * * * *

कभी कभी घूमते घूमते ही गांधीजी मुलाकातियोंसे बातचीत करते थे | तब गंभीर चर्चाके दरमियान साथके बालक ही बीचमें कुछ बोल कर गंभीर वातावरणको हलका बनाते थे |

एक बार वाईसरॉयने एक महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय सवाल पर चर्चा करनेके लिए गांधीजीको दिल्ली आनेका आमंत्रण दिया | शामको घूमते हुए गांधीजी उस सम्बन्धमें साथियोंसे चर्चा कर रहे थे |



दिल्ली जानेकी बात सुनकर एक बालक बीचमें बोल उठा – बापूजी, आप दिल्ली जानेवाले हैं ?

गांधीजी – हां, भाई !

बालक – किसलिए ?

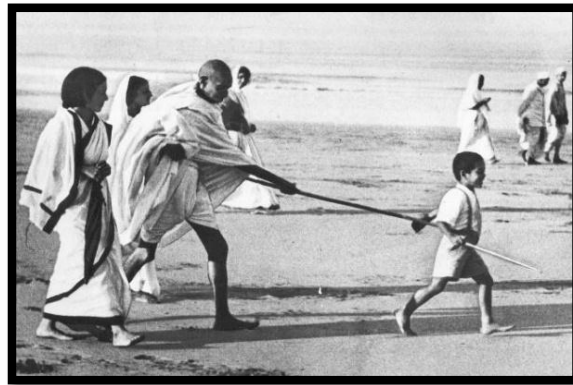
गांधीजी – वाईसरॉयसे मिलनेके लिए।

बालकके मनमें कुतूहल जागा कि यह वाईसरॉय आखिर कौन है, जिससे मिलनेके लिए हमेशा बापूको ही दिल्ली जाना पड़ता है ! “बापूजी, हमेशा आप ही क्यों वाईसरॉयसे मिलने दिल्ली जाते हैं ? वाईसरॉय आपसे मिलनेके लिए यहां क्यों नहीं आते ?”

समूचे राष्ट्रके हृदयकी भावनाको प्रकट करनेवाले बालकके ये वचन सुनकर साथके सब लोग हंस पड़े। गांधीजी भारतके ३५ करोड़ प्रजाजनोंके हृदय-सम्राट थे। उनकी उमरको देखते हुए अगर वाईसरॉय उनसे मिलने चले आते, तो कुछ अनुचित न होता। लेकिन वे तो एक पराधीन राष्ट्र पर राज्य करनेवाली विदेशी हुकूमतके प्रतिनिधि ठहरे। अपना स्थान छोड़कर गांधीजीसे मिलने आनेमें उनकी हेठी न हो जाती! यह प्रतिष्ठाका भूत ही उसमें बाधक होता था। लेकिन भोलाभाला बालक यह सब कैसे समझे ?

गांधीजीमें बालकोंके साथ एकरूप हो जानेकी अनोखी नम्रता थी। एक बार वे समुद्रके किनारे घूमने निकले। अन्तेवासी और बाल-गोपाल तो उनके साथ मौजूद थे ही। चलते चलते एक बालक गांधीजीकी लकड़ी पकड़ कर खींचने लगा। लकड़ीका एक सिरा पकड़ कर बालक आगे आगे चलने लगा और लकड़ीका दूसरा सिरा पकड़कर गांधीजी उसके पीछे हंसते हुए चलने लगे। बालक ऐसी शानसे चल रहा था, मानो वह गांधीजीको रास्ता बता रहा हो। किसी फोटोग्राफरने इस चिरस्मरणीय दृश्यका चित्र ले लिया और उसे प्रकाशित करते समय यह नाम दिया :

‘नेताको भी मार्ग दिखानेवाला !’



हरिजन-यात्राके दिनोंमें गांधीजी एक बार कोई महत्त्वका लेख लिख रहे थे | पास ही हरिजन-फंडमें मिले हुए नोट, रुपये, आने, पैसे और गहने पड़े हुए थे | उस बीच एक बच्चा अपनी मांसे बिछुड़ कर वहां आ पहुंचा | लिखना छोड़ कर बच्चेको खेलाने जितना समय गांधीजीके पास नहीं था | यह बालक काममें अड़चन डाले या रोने लगे तो मुसीबत खड़ी हो जायगी, ऐसा सोचकर गांधीजीने उसका मन खेलमें लगानेके लिए पास पड़ा हुआ सोनेका एक गहना उसके सामने फेंक दिया | बालकको खिलौना मिल गया | उसने खेलना शुरू कर दिया | इधर गांधीजीने लिखना जारी रखा |

बच्चेको खोजते खोजते मां गांधीजीके कमरेमें आयी | उसे सोनेके गहनेके साथ खेलते देख कर मां घबराई और उसके पास दौड़ आयी | बापू कहीं नाराज न हो जायें, ऐसा सोच कर वह बालकसे गहना छिनने लगी | लेकिन जब उसे पता चला कि गहना तो उसे बापूजीने खेलनेको दिया है, तब उसके अचरचका पार न रहा !

* * * * *

गांधीजी जहां भी जाते वहां बालकोंके साथ विनोद करना कभी न चूकते थे | एक बार वे एक शाला देखने गये | वहां एक वर्गके विद्यार्थियोंके साथ उन्होंने विनोद शुरू किया | दूर बैठा एक छोटा विद्यार्थी बीचमें कुछ बोल उठा | लेकिन अनुशासनके प्रेमी (!) शिक्षककी कड़ी नजर उस पर पड़ी, इसलिए वह खामोश हो गया | लेकिन गांधीजीसे यह बात छिपी न रही | वे सीधे उस बालकके पास जाकर खड़े हो गये और बोले : “बेटा, तुम मुझे बुला रहे थे न ? बोलो, क्या कहना है ? घबराना मत हां |”

बालक – आप कुर्ता क्यों नहीं पहनते ? मैं अपनी मांसे कहूंगा कि आपके लिए एक कुर्ता सी दे | आप मेरी मांका सीया हुआ कुर्ता पहनेंगे?

गांधीजी – जरूर पहनूंगा | लेकिन मेरी एक शर्त है | मैं अकेला नहीं हूं |

बालक – तो आप कितने आदमी हैं ? मांसे मैं दो कुर्ते सीनेको कहूंगा |

गांधीजी – मेरे तो ४० करोड़ भाईबन्द हैं | उन सबके अंग कुर्तेसे ढंके, तभी तो मैं कुर्ता पहन सकता हूं | तुम्हारी मां ४० करोड़ कुर्ते सी देगी ?

बालकके मुंहसे कोई शब्द न निकला | वह सोचने लगा, इतने कुर्ते तो मां कहांसे दे सकेगी | लेकिन दरिद्र-नारायणके लिए दयासे पिघलनेवाले बालकके हृदयको गांधीजीने पहचान लिया | उन्होंने प्यारसे बालककी पीठ थपथपायी और हंसते हंसते वर्गसे बाहर निकले |

कैसा मनोहारी था वह दृश्य !



* * * * *

बहुत बार महत्त्वके कामोंमें लगे होनेसे बड़े आदमी बच्चोंकी कठिनाईयों पर कोई ध्यान नहीं देते | लेकिन गांधीजी ऐसे समय भी बालकोंकी मददमें दौड़े बिना नहीं रहते थे |

एक बार गांधीजी महाबलेश्वरमें आराम कर रहे थे | वहां उनके पुत्र श्री देवदास गांधी अपने लड़केके साथ उनसे मिलने आये | देशके अनेक नेतागण भी वहां आये हुए थे | सब अपनी अपनी चर्चामें मशगूल थे |

श्री देवदासभाईका लड़का अपने-आप गणितके सवाल हल कर रहा था | लेकिन एक सवाल वह छुड़ा न सका | अपने पाससे गुजरनेवाले बड़े बड़े आदमियोंसे वह सवाल सिखानेके लिए कह रहा था, लेकिन किसीने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया |

आखिर वह गांधीजीके पास जाकर बोला – बापू, इतने आदमी यहां हैं, पर कोई मुझे सवाल नहीं सिखाता | आप सिखायेंगे ?

गांधीजी कुछ लिख रहे थे | लेकिन उनका प्रेमभरा हृदय बच्चेको ना कैसे कह सकता था ? वे बोले :

“ तू मेरे पास बैठ | इन सब बड़े आदमियोंके पास बहुत काम होता है | तूने मुझसे क्यों नहीं पूछा ? अब तूझे कोई सवाल न आये तो मेरे पास चले आना | देखूँ तेरा गणित |”

अपना लिखना बन्द करके गांधीजी उस बालकको गणित सिखाने लगे | बालकके आनन्दकी कोई सीमा न रही |

गांधीजी बालकोंके साथ जैसा बरताव करते थे, वह हमें ईसा मसीहकी याद दिलाता है | ईसा जब जेरुसलेमके रास्तोंसे गुजरते थे, तब उन्हें देखते ही बच्चे उनके पास दौड़ आते और खिलखिलाते हुए उन्हें घेर लेते थे | ऐसी ही एकरूपता गांधीजी भी बच्चोंके साथ अनुभव कर सकते थे | यह बात उपरके अनेक प्रसंगोंसे हम देख सकते हैं |

* * * * *

गांधीजी जब इंग्लैंड गये, तब वहांके बालकोंको ऐसा न लगा की कोई परदेशी हमारे यहां आ गया है | गांधीजीकी आंखोंमें बालकोंको सन्त फ्रांसिसकी करुणा और प्रेम दिखाई दिया | बच्चे उन्हें ‘गांधी काका’ के प्यारे नामसे पुकारते थे और दौड़कर उनके पास चले आते थे | जब बच्चोंको यह पता चला



कि गांधीजी बड़े सवेरे घूमने निकलते हैं, तब वे अपने माता-पितासे कहने लगे, “गांधी काका यहां घूमने आते हैं | इसलिए हमें सवेरे जल्दी जगा देना | हमें भी उनके साथ घूमने जाना है |”

गांधीजी उन बच्चोंको भी अहिंसाकी बातें सुनाते थे | अहिंसाका यह सन्देश वे अपने माता-पिताके पास ले जाते और उनसे कहते, “अबसे हमें तुम मारना मत | गांधी काका कहते हैं कि किसीको मारना नहीं चाहिये |” प्रेमका अमर सन्देश ग्रहण करनेमें निर्दोष बालकोंको देर थोड़े ही लगती है !

“वाईसरॉयकी मेहरबानीसे स्वराज्य नहीं मिलेगा, लेकिन बालकोंके निर्मल हास्यसे स्वराज्य जरूर मिलेगा |” गांधीजीके इन वचनोंमें कितना बड़ा सत्य छिपा है ? हमारे एक महान कविने गया है : “बालक ईश्वरके पैगम्बर हैं |” सन्त और पैगम्बर बालकोंकी तरह निर्दोष भावसे पृथ्वी पर जीवन बिताते हैं | गांधीजीका जीवन इस कथनकी सच्चाईका एक जीता-जागता प्रमाण है |



भक्ति और श्रमकी प्रसादी

आगाखान महलकी नजरकैदसे गांधीजी मुक्त हो चुके थे | तबीयत अच्छी न होनेसे वे समुद्र-किनारे जूहमें आराम कर रहे थे | जेलमें अपने दो स्वजनों – महादेव देसाई और राष्ट्रमाता कस्तूरबा – के अवसानके बाद वे बाहर आये थे | इसलिए परिचित और अपरिचित असंख्य मुलाकाती रोज उनसे मिलने आते थे | श्रीमती सरोजिनी नायडू गांधीजीकी रक्षिका थीं, इसलिए अनेक मुलाकातियोंको ना कहनेका कठिन काम उन्हें करना पड़ता था | इससे गांधीजीको बड़ा आराम मिलता था |

एक दिन सबको अचम्भेमें डालनेवाला एक मुलाकाती वहां आ पहुंचा | वह १०-१२ वर्षका एक बालक था | उसके हाथमें दो-तीन रूपयेके फल थे | वह गांधीजीको अपने हाथों वे फल देनेका आग्रह करने लगा | बड़ोंको तो समझाया जा सकता था, परन्तु इस छोटे बालकको कैसे समझाया जाय कि गांधीजीके पास जाकर उन्हें परेशान नहीं किया जा सकता ? सरोजिनीदेवीकी कवि-प्रतिभा भी बालकको समझानेमें असमर्थ रही ! निर्दोष गांधीभक्त बालकके अटल आग्रहके सामने सरोजिनीदेवीको हार माननी पड़ी | वे हंसते हंसते बालकको गांधीजीके पास ले गयीं | बापूजीके चरणोंमें फल रखकर वह खड़ा रहा | वह कोई बात करने तो आया नहीं था | उसके भक्तिपूर्ण हृदयकी एकमात्र अभिलाषा यही थी कि राष्ट्र-देवता गांधीजी उसके लाये हुए फल खायें |

गांधीजीके साथियोंमें बालकके बारेमें बातें होने लगीं | किसीके मुंहसे इस आशयके शब्द निकले कि यह कोई भिखारीका छोकरा मालूम होता है | ये शब्द सुनते ही बालककी आंखें चमक उठीं | अपने स्वाभिमान पर की गयी इस चोटको वह सह न सका | उसने कहा : “नहीं महात्माजी, मैं भिखारीका लड़का नहीं हूं | आपकी रिहाईके बाद आपके चरणोंमें कुछ रखनेकी इच्छासे मजदूरी करके मैंने जो पैसे कमाये, उन्हीं पैसोंसे ये फल खरीद कर मैं आपके लिए लाया हूं |”

बालकके इन स्वाभिमानभरे शब्दोंने गांधीजीके हृदयको हिला दिया | धनी मित्रों और हितेच्छुओंकी ओरसे फलकी टोकरीयोंकी भेंट उन्हें हमेशा मिलती रहती थी | लेकिन इस गरीब दिखाई देनेवाले बालककी भेंट तो अमूल्य और अनोखी थी | क्योंकि उसके पीछे बालककी भक्ति और श्रमका काव्य था | दरिद्रनारायणके उपासक गांधीजी इस भेंटकी उपेक्षा भला कैसे कर सकते थे ?

उन फलोंमें से एक फल लेकर गांधीजीने बालकके सामने रखते हुए कहा : “लो बेटा, अपने श्रमका फल पहले तुम्हीं भोगो |”



“नहीं महात्माजी, आप खायेंगे तो मैं यही मानूंगा कि फल मेरे पेटमें गये हैं।”

इतना कह कर उसने गांधीजीको भक्तिभावसे प्रणाम किया और वह चला गया। गांधीजीकी करुणाभरी आंखें उस बालकको देखती रहीं।

साथियोंमें से कोई बोल उठा, “धन्य है वह बालक ! वह आया और क्षणभरमें अपने व्यवहारसे सबको जीत कर चला गया।”



३

मेरा सिर भी ले लो !

वे १९२०-२१ की राष्ट्रीय जागृतिके चिरस्मरणीय दिन थे | गांधीजी बारडोली आये हुए थे | उनका मुकाम एक प्रेसके छोटेसे मकानमें था |

गांधीजीके आनेसे वहांके वातावरणमें आनन्द और उत्साह फैल गया था | उनके बारडोलीके साथी तो उत्साहसे थिरक उठे थे | इसका कारण यह था कि सत्याग्रहकी लड़ाईके लिए गांधीजीने बारडोलीका चुनाव किया था |

एक दिन ये साथी आपसमें गंभीर बातें कर रहे थे | सबके चेहरों पर चिन्ताका भारी बोल दिखाई देता था | किसीने उनके पास यह खबर भेजी थी कि बारडोलीकी मसजिदमें एक उंचा, हट्टा-कट्टा और कद्दावर काबुली जैसा आदमी आया है; उसकी हलचल कुछ रहस्यपूर्ण मालूम होती है, क्योंकि वह गांधीजीके बारेमें पूछताछ करता है |

“बापूजी पर वह काबुली कहीं हमला न कर दे” ऐसी शंका होने पर साथियोंने सावधानीके उपाय शुरू कर दिये | मकानके आसपास कंटीले तारोंकी बाड़ लगी हुई थी, लेकिन दरवाजा खुला रहता था | उसे बन्द करके ताला लगा दिया गया और रातमें वहां पहरा बैठाया गया |

सचमुच वह रहस्यमय काबुली रातको तारकी बाड़के पास आया | उसे लांधकर उसने भीतर आनेकी कोशिश की | लेकिन पहरेदारोंने उसे अन्दर आनेसे रोका | रात बीती और सवेरा हुआ | लेकिन साथियोंकी शंका और पक्की हो गयी |

दुसरे दिन कुछ मुसलमान भाई मसजिदसे समाचार लाये: “वह आदमी पागल जैसा मालूम होता है | वह गांधीजीकी नाक काटनेकी बात करता है !”

गांधीजीके साथी यह बात सुनकर बहुत घबरा गये | उन्होंने बारडोलीकी धरती पर गांधीजीकी नाक काटनेकी बात करनेवाले इस रहस्यमय काबुलीकी हलचल पर निगरानी रखना शुरू कर दिया |

गांधीजीने अनेक कार्योंमें व्यस्त रह कर वह दिन पूरा किया | रात हुई | आकाशमें तारे टिमटिमाने लगे | दिनका शोरगुल बन्द हो गया और रातकी नीरव शान्ति फैल गयी | रोजका काम पूरा करके गांधीजी अपनी आदतके मुताबिक खुले आकाशके नीचे किये हुए बिस्तर पर सोने आये | साथी भी उनके चारों ओर चारपाईयां डालकर सोनेकी तैयारी करने लगे | अपने आसपास साथियोंको सोते देख गांधीजीको



थोड़ा आश्चर्य हुआ | उन्होंने पूछा : “रोज तो आप सब बाहर नहीं सोते, तब आज क्यों आपने खुलेमें मेरे चारों ओर अपनी चारपाईयां डाल दी हैं ?”

आखिर नाक काटनेकी बात उन्हें बताया गयी | पूरी बात सुन लेनेके बाद बालकों जैसी भोली हंसी हंस कर गांधीजीने कहा, “आप मुझे बचानेवाले कौन हैं ? प्रभुने अगर मुझे मारनेका सोचा होगा, तो उसे कौन रोक सकेगा ? आप जाकर अपने रोजके स्थान पर सो जायिए |”

बापूकी आज्ञाकी उपेक्षा भला कौन कर सकता था ? साथियोंने अनिच्छासे अपनी चारपाईयां वहांसे हटा लीं | अजातशत्रु बापूको भला किसका डर हो सकता था ? वे तुरन्त गहरी नींदमें सो गये |

लेकिन साथियोंको नींद कैसे आती ? चारपाईयां तो अन्दर कर ली गयीं, लेकिन कोई सोया नहीं | सब जागते रहे | वह रहस्यमय काबुली दूसरी रातको भी बाड़के पास आकर खड़ा रहा | उसने फिर अन्दर आनेकी कोशिश की, लेकिन साथियोंने उसे रोका |

रात बीती | सवेरा हुआ | प्रार्थना आदि कार्योंसे निबट कर गांधीजी कातने बैठे | वह काबुली अभी तक बाड़के पास खड़ा ही था | किसीने गांधीजीका ध्यान उसकी ओर खिंचा |

“उसे मेरे पास आने दीजिये | आपमें से कोई उसे रोके नहीं |” पहरा देनेवाले साथियोंके पास गांधीजीने संदेशा भेजा |

साथी उसे गांधीजीके पास ले आये | लेकिन वे सावधानीके साथ गांधीजीके आसपास खड़े रहे, ताकि काबुली उन पर हमला न कर सके |

“भाई, तुम यहां क्यों खड़े थे ?” बात शुरु करते हुए गांधीजीने काबुलीसे पूछा |

काबुली, “आप अहिंसाका उपदेश देते हैं | इसलिए मुझे आपकी नाक काटकर यह परीक्षा करनी थी कि ऐसे मौके पर आप कहां तक अहिंसक रह सकते हैं |”

गांधीजी – (हंसकर) इतनी ही परीक्षा करनी है न ? लेकिन सिर्फ नाक ही क्यों, अपना यह धड़ और सिर भी मैं तुम्हें सोंप देता हूं | तुम्हें जो भी प्रयोग करना हो बिना किसी संकोचके करो |

गांधीजीके प्रेमभीने शब्द सुनकर काबुली गद् गद् हो गया और प्रणाम करके बोला, “आपके दर्शनसे मुझे विश्वास हो गया है कि आप सत्य और अहिंसाके सच्चे पुजारी हैं | मेरा अपराध क्षमा कीजिये |”



फिर तो गांधीजीने उसके साथ लम्बी बातचीत की | और उस पर इतना प्रेम बरसाया कि वात्सल्यमय पिताके समान महापुरुषके बारेमें ऐसा बुरा विचार करनेके लिए उसे बड़ा पछतावा हुआ | अन्तमें गांधीजीसे क्षमा मांगकर वह बारडोलीसे चला गया |



गांधीकथा कहनेवाले लिफाफे

डाक-पेटीमें डाले जानेवाले पत्रों पर जिन लोगोंका निश्चित पता लिखा होता है, उन्हें डाक-विभाग उनके पत्र सही-सलामत पहुंचा देता है, परन्तु पतेमें छोटीसी भी गलती रह जानेसे पत्र बहुत बार गलत जगह पहुंच जाते हैं और जिनके नाम लिखे जाते हैं उन्हें मिलते नहीं हैं। डेड लेटर आफिस ऐसे पत्रोंकी उचित व्यवस्था करता है, फिर भी किसी तरहकी जानकारीके अभावमें अनेक पत्रोंका उसे नाश कर देना पड़ता है।

देश-विदेशके ज्ञात और अज्ञात हजारों आदमी गांधीजीको पत्र लिखते थे। अज्ञात पत्रलेखकोंमें से कुछ तो जानते भी नहीं थे कि गांधीजी कौन हैं और कहां रहते हैं। इस कारणसे गांधीजीको लिखे गये पत्रोंके अनिश्चित पतेसे डाक-विभागको बहुत बार बड़ी परेशानी उठानी पड़ती थी।

एक बार दिल्लीकी पोस्ट आफिसमें नीचेके पतेवाला एक लिफाफा आया :

दि किंग ऑफ इंडिया,

देहली, इंडिया

डाक-विभाग इस चिन्तामें पड़ गया कि यह पत्र किसे पहुंचाया जाय। आफिससे एक अधिकारीने सुझाया कि यह पत्र वाईसरॉयका होगा। लेकिन वाईसरॉय भारतके राजा नहीं हैं, इसलिए पत्र उन्हें नहीं दिया जा सकता। भारतका वैधानिक राजा तो इंग्लैंडमें रहता है, तब फिर यह पत्र दिल्लीके पते पर क्यों भेजा गया होगा? आखिर पत्र फोड़कर डाक-विभागने देखा तो मालूम हुआ कि पत्र गांधीजीको लिखा गया था! लेकिन 'भारतके राजा' उस समय इंग्लैंडमें नहीं, बल्कि अंग्रेजोंकी जेलमें बैठे थे। इसलिए वह पत्र यरवडा जेलमें गांधीजीके पास पहुंचाया गया। इस अज्ञात पत्रलेखकका यह विशेषण कितना सही था? भारतकी जनताके सच्चे राजा तो गांधीजी ही हो सकते हैं, दूसरा कोई नहीं! दूसरे राजा तो आयेंगे, जायेंगे और कुछ समय बाद भारतकी जनता उन्हें भूल जायगी। लेकिन ये राजा केवल भारतके ही नहीं, बल्कि विश्वके करोड़ों लोगोंके हृदय-सिंहासन पर बिराजते हैं। क्योंकि उनका राज्य प्रेम और अहिंसाकी बुनियाद पर खड़ा है। उसके लिए मनुष्यकी रची हुई भौगोलिक सीमाओंका कोई बन्धन नहीं है।

दूसरी बार भारतके डाक-विभागको इस पतेका एक पत्र मिला :



दि ग्रेट अहिंसा नोबल

ऑफ इंडिया

भला यह पत्र किस शहरमें और किसके पास पहुंचाया जाय ? डाक-विभागके सामने एक बड़ी समस्या खड़ी हो गयी | लेकिन एक होशियार अधिकारीने बुद्धि दौड़ाई कि अहिंसाके महान फरिश्ते तो गांधीजी ही हैं और वे वर्धामें रहते हैं | सचमुच वह पत्र गांधीजीको ही लिखा गया था, और डाक-विभागने उसे ठीक जगह पहुंचा दिया |

एक बार एक विदेशी पत्रकारकी इच्छा गांधीजीको पत्र लिखनेकी हुई | लेकिन वह अहिंसाके अचूक शस्त्रसे ब्रिटिश सल्तनतको हिला देनेवाले गांधीजीका पूरा नाम नहीं जानता था | गांधीजी भारतमें रहते हैं, इतना उसे मालूम था | लेकिन भारतमें किस जगह रहते हैं, इसका उसे पता न था | कलाकार बड़ी परेशानीमें पड़ा | पत्र गांधीजी तक कैसे पहुंचाया जाय ? लेकिन आखिरमें कलाकारकी प्रतिभा चमकी | उसने लिफाफे पर गांधीजीका हूबहू स्केच (चित्र) बना दिया और 'इंडिया' लिख दिया |

बरसों तक रोज-रोज गांधीजीका नाम और उनके चित्र अखबारोंमें छपते रहे थे | इसलिए गांधीजीका प्रत्यक्ष दर्शन न करने पर भी डाक-विभागका छोटेसे छोटा कर्मचारी तक इस स्केचको जानता था | इसलिए यह पत्र गांधीजीके पास पहुंच गया | पता लिखनेकी यह बिलकुल नयी और मौलिक रीति देखकर गांधीजी भी खुश हुए और कलाकारोंकी प्रतिभाकी सहराना करने लगे |

कांग्रेसके जरिये गांधीजीने भारतकी स्वतंत्रताके लिए बड़े बड़े आन्दोलन चलाये थे, लेकिन कुछ विदेशी लोग यह न समझ पाते थे कि गांधीजीका कांग्रेसमें क्या स्थान है | गांधीजी कांग्रेसके चार आना मेम्बर हों या न हों, फिर भी कांग्रेस संस्थामें उनका ऐसा अनोखा स्थान बन गया था कि उनकी सलाह लिये बिना कांग्रेस एक कदम भी नहीं उठाती थी | यही भाव विदेशियों द्वारा गांधीजीको लिखे गये पत्रोंके पते परसे भी प्रकट होता है | इसके कुछ नमूने ये हैं :

- (१) हेड ऑफ कांग्रेस,
वर्धा, इंडिया
- (२) महात्मा गांधी,
सुप्रीम प्रेसिडेंट ऑफ इंडियन नेशनल कांग्रेस,
वर्धा, इंडिया
- (३) मोहनदास के. गांधी,



लीडर इन इंडियन नेशनल कांग्रेस,
देहली, इंडिया

विदेशोंके कुछ हिस्सोंमें ऐसी छाप पड़ी हुई थी कि भारत-सरकार गांधीजीकी इच्छाके विरुद्ध कुछ भी नहीं कर सकती | कुछ विदेशी ऐसा भी मानते थे कि भारत-सरकारके प्रधानमंत्री भले जवाहरलाल नेहरु हों, परन्तु उस सरकारके सर्वसत्ताधारी कर्ता-धर्ता तो गांधीजी ही हैं | इस मान्यताकी झांकी करानेवाला गांधीजीको लिखा गया वह लिफाफा कितना रसप्रद है :

महात्मा गांधी,
डिक्टेटर ऑफ गवर्नमेंट ऑफ इंडिया,
वर्धा, इंडिया

भारतका तंत्र दिल्लीसे नहीं, बल्कि असलमें वर्धासे चलता था, विदेशियोंकी यह मान्यता कितनी सच्ची थी! दिल्ली भले ही भारतकी राजधानी हो, परन्तु भारतका हृदय तो वर्धामें ही था, इस बातसे कौन इनकार कर सकता है ?

गांधीजी एक महान यात्री थे | उन्होंने भारतकी जितनी लम्बी-चौड़ी यात्रा की थी, उतनी भारतके किसी पुरुष या नेताने नहीं की | रेलके तीसरे दर्जेका डिब्बा ही बहुत बार उनका घर और आफिस बन जाता था | इसलिए पत्र लिखनेवाले बड़ी परेशानीमें पड़ जाते थे कि गांधीजीको किस स्थानके पते पर पत्र लिखा जाय | ३५ करोड़ भारतवासियोंके हृदयमें निवास करनेवाले गांधीजीका पता क्या हो सकता था? उनका पता लगाना डाक-विभागका फर्ज था! गांधीजीको लिखा हुआ पत्र कभी गलत जगह जा ही नहीं सकता, वह उन्हें जरूर मिलेगा, ऐसी अनोखी श्रद्धासे ओतप्रोत होकर किसीने लिफाफे पर यह पता लिखा :

महात्मा गांधी,
जहां हों वहां

बेशक, यह पत्र गांधीजीको मिल गया था !

गांधीजी भारतके महान राजनीतिक नेता थे, फिर भी करोड़ों ग्रामवासी उनकी सन्त प्रकृतिसे आकर्षित हुए थे, वे भारतके ही नहीं बल्कि सारे जगतके सन्त और ईश्वरके भक्तके रूपमें पूजे जाते थे | गांधीजीके प्रति रहे इस भक्तिभावका प्रतिबिम्ब हमें एक निर्दोष ग्रामवासीके इस पतेमें दिखाई देता है :

दुनियाके भगत



श्री महात्मा गांधी, वर्धा

विदेशोंके दूर दूरके कोनोमें बसनेवाले अनेक लोग यह समझ ही नहीं पाते थे कि गांधीजी इतने शक्तिशाली राजनीतिज्ञ कैसे माने जाते हैं। इतना भारी राजनीतिक प्रभाव रखनेवाले गांधीजी भारतके गवर्नर या गवर्नर जनरल जरूर होने चाहिये। ऐसी कल्पनासे लिखा हुआ यह पता देखिये :

टू हिज़ एक्सिलेंसी,
महात्मा गांधी, ऐस्क्वायर,
कलकत्ता, इंडिया

लाखों सीधे-सादे और भोलेभाले किसान और जुलाहे गांधीजीको अपना ही आदमी मानते थे और गांधीजी स्वयं भी अपनेको किसान और जुलाहा कहते थे। उनकी पोशाक, उनकी रहन-सहन गरीब किसानोंसे मिलती-जुलती थी। सेवाग्राममें वे गरीबोंके जैसी एक छोटीसी झोंपडीमें रहते थे और तन ढंकनेको पूरे कपड़े न पानेवाली गरीब अनाथ जनताके प्रतिनिधिके रूपमें केवल घुटनों तकका कच्छ ही पहनते थे। इसलिए किसीने लिखा :

महात्मा गांधी,
फार्मर एण्ड वीव्हर,
बम्बई

गांधीजी बैरिस्टर थे। उनके कानूनके इस अध्ययनको कुछ लोग जरूरतसे ज्यादा महत्त्व देते थे और मानते थे कि वे बैरिस्टर न बने होते तो इतने शक्तिशाली राजनीतिक नेता न बन पाते। ऐसा माननेवाले लोग उन्हें इस तरह लिखते थे :

महात्मा गांधी, बार-एट-लॉ,
भंगी कॉलोनी, दिल्ली

अपने जेल-जीवनके अनुभवोंमें गांधीजीने लिखा है कि मैं एक पुराना अनुभवी कैदी हूँ। अफ्रीका और भारतमें वे अनेक बार जेलमें रह चुके थे। भारतमें उन्हें खास तौर पर यरवडा जेलमें ही कैद किया जाता था। किसी विदेशीको जेलका ठीक नाम याद न रहनेसे उसने 'गांधी-प्रिज़न' के पते पर गांधीजीको पत्र लिखा :

महात्मा गांधी,
गांधी-प्रिज़न,
पूना, इंडिया



एक विदेशीका यह समझना कितना सच था कि यरवडा गांधीजीका जेल है।

गांधीजी हिन्दू-मुस्लिम-एकताके बहुत बड़े हिमायती थे। उन्होंने जीवनभर इस एकताके लिए काम किया। पर हिन्दू और मुसलमान दोनों उन्हें समझ न सके, यह आधुनिक भारतके इतिहासकी अत्यन्त करुण कथा है। मुसलमान उन्हें अपना दुश्मन समझते थे और हिन्दुओंका एक वर्ग मुसलमानोंके प्रति गांधीजीकी हमदर्दी होनेके कारण उन्हें हिन्दू धर्मका द्रोही मानता था। हिन्दुओंकी यह असहिष्णुता ऐसी चरम सीमाको पहुंची कि एक हिन्दूने ही गांधीजीके जीवनका अन्त कर दिया। गलत-फहमी और असहिष्णुताके कारण घटी हुई यह घटना मानव-जीवनकी एक अत्यन्त करुण घटना है। इसी असहिष्णुताका प्रतिबिम्ब गांधीजीको लिखे एक पत्रके इस पतेमें देखनेको मिलता है :

महंमद गांधी,
दिल्ली

परन्तु हिन्दुओंका बहुत बड़ा वर्ग उन्हें महात्मा, सन्त और ईश्वरी अवतारकी तरह पूजता आया है। गांधीजीके जीतेजी ही एक मन्दिरमें उनकी मूर्तिकी स्थापना कर दी गयी थी। गांधीजीने इसका कड़ा विरोध किया था। फिर भी करोड़ों हिन्दुओंके हृदयमें वे एक अवतारी पुरुषके रूपमें ही बिराजते थे। नीचेका पता इस मान्यताका समर्थन करता है :

श्री कृष्णा गांधी,
दिल्ली

गांधीजी केवल भारतके ही नहीं, सारे विश्वकी महान विभूती थे। सेवा उनका जीवन-कार्य था। इस भावनाका प्रतिबिम्ब भी हमें नीचेके एक पतेमें मिलता है। किसी भाईने लिखा था :

जगत-सेवक
महात्मा गांधीजी,
वर्धा

लाखों अज्ञात लोग गांधीजीको कैसे कैसे विविध रूपोंमें देखते थे, इसकी मनोरम झांकी हमें उपरके पतोंमें देखनेको मिलती है। ये लिफाफे हमें गांधीजीके रहस्यपूर्ण और विराट व्यक्तित्वके विविध पहलुओंकी कहानी कहते हैं।



बा और बापूका विनोद

गांधीजीने आश्रमके बीमारोंको रोज देखनेका एक नियम ही बना लिया था | इसे वे जीवनका महत्त्वपूर्ण कार्य मानते थे | बीमारोंमें बालक होते, स्त्रियां होतीं, पुरुष होते और कभी कभी कोई नेता भी होते थे | अपनी मुलाकातके समय गांधीजी बीमारोंकी तबीयतके हाल पूछते थे, उनके साथ विनोद करके उन्हें हंसाते थे और भोजन तथा अन्य सार-संभालके बारेमें आवश्यक सूचनायें भी देते थे | गांधीजीके आनेसे और उनके सहानुभूति तथा प्रेमभरे बरतावसे बीमारोंको इतनी तसल्ली मिलती थी कि कभी कभी वह दवाका भी काम करता था |

एक बार सेवाग्राममें बा भी बीमारीकी शिकार हो गयीं | गांधीजीकी कुटियासे थोड़ी दूर बनी हुई दूसरी कुटियामें वे रहती थीं | बाकी बीमारीके दिनोंमें गांधीजी रोज दो बार उन्हें देखने जाते थे | इसमें कभी नागा नहीं होता था | लेकिन उनके सिर पर सारे राष्ट्रके कामका भार रहता था | एक दिन गांधीजीके पास एक अत्यन्त महत्त्वका काम आ गया | उस काममें वे इतने रम गये कि बाको देखने जानेका कार्यक्रम उन्हें रद कर देना पड़ा |

नियमके अनुसार गांधीजी मिलने आयेंगे, इस आशामें बा बिस्तरमें लेटे लेटे उनकी राह देखती रहीं | लेकिन गांधीजी नहीं आये, इससे बाको थोड़ा बुरा लग गया |

दूसरे दिन समय पर वे बाके बिस्तरके पास आ कर खड़े हो गये | बा खामोश लेटी रहीं |

गांधीजीने उनसे पूछा, “क्यों, आज कैसी तबीयत है ?”

बाका मन पिछले दिन गांधीजीके न आनेसे दुखी था | वे गुस्सेमें बोलीं, “आप तो बड़े आदमी ठहरे | महात्मा कहलाते हैं | आपको सारी दुनियाकी चिन्ता रहती है | फिर मेरी चिन्ता आप क्यों करते हैं ?”

गांधीजी बाकी नाराजी और व्यंगको समझ गये | बा निडर महिला थीं | कभी कभी वे गांधीजीको भी डाट देती थीं | इसलिए उनके ये वचन सुनकर गांधीजी मुसकराये और उनके माथे पर अपना प्रेमल हाथ रखकर बोले :

“अच्छा, तुम्हारे लिए भी मैं बड़ा आदमी और महात्मा बन गया !”

गांधीजीके ये वचन सुनकर बाकी सारी नाराजी काफूर हो गयी | उनके चेहरे पर मीठी मुसकान दौड़ गयी | और बा बापू दोनों सहज भावसे बातें करने लगे |

कैसा अनोखा था दोनोंका दाम्पत्य प्रेम !



६

बकिंघम महलमें

गांधीजी गोलमेज परिषदमें शरीक होनेको इंग्लैंड गये, तब वहांके लोगोंमें गांधीजीके जीवनके बारेमें जाननेका भारी कुतूहल था। इंग्लैंडके अखबारोंमें उनके बारेमें अनेक सच्ची-झूठी बातें छपी थीं। कुछ लोगोंके मनमें ब्रिटिश साम्राज्यकी नींवको हिला देनेवाले 'विद्रोही और देशद्रोही गांधी' के लिए नफरतका और गुस्सेका भाव था। वे इंग्लैंडके अखबारोंमें गांधीजीको जो प्रसिद्धि मिल रही थी उससे घबराते थे। दूसरी ओर मानवताके महान पुजारी 'विश्व-मानव गांधी' का स्वागत करनेवाले मित्रों और प्रशंसकोंका एक बड़ा समूह भी वहां इकट्ठा हो गया था।

गोलमेज परिषदमें शरीक होनेके लिए इंग्लैंड गये हुए भारतीय प्रतिनिधि सम्राट्की सरकारके मेहमान थे। इसलिए राज्यकी ओरसे गांधीजीके रहनेकी व्यवस्था लन्दनके वेस्ट एन्ड नामक होटलमें की गयी थी और उनकी रक्षाके लिए स्काटलैंड यार्डके दो खुफिया पुलिस भी तेनात किये गये थे। परन्तु गांधीजीने तड़क-भड़क और वैभव-विलासके साज-सामनसे भरेपूरे होटलमें राज्य मेहमान बननेके बजाय मजदूर-बस्तीके किंग्सली हॉलमें समाज-सेविका म्यूरियल लेस्टरके साथ रहना ज्यादा पसन्द किया। इसलिए वे वहांकी गरीब और मेहनत-मजदूरी करके रोटी कमानेवाली आम जनताके सम्पर्कमें आ सके। गांधीजीकी सादगी, स्वेच्छासे पसन्द की हुई गरीबी, जीवनकी पवित्रता, मानवतासे भरा हुआ प्रेमल हृदय, दूसरोंको प्रसन्न करनेवाला हास्य तथा वात्सल्य और करुणासे छलकती आंखें देखकर बालक-बूढ़े, स्त्री-पुरुष सब उनसे प्रेम करने लगे, और थोड़े ही समयमें गांधीजीने लोगोंके हृदयमें आत्मीय जनका स्थान प्राप्त कर लिया।

परिषदमें हाजिर रहनेकी अपेक्षा बाहर गांधीजी पर कामका अधिक बोझ रहता था। फिर भी उनके नित्यके क्रममें कोई बाधा नहीं पड़ती थी। मौनके दिन भी वे परिषदमें हाजिर रहते थे, चुपचाप बैठे बैठे दूसरोंकी बातें सुनते थे और महत्त्वके प्रश्नों पर उनके मनमें जो प्रतिक्रिया होती थी उसे लिखकर तुरन्त भारत-मंत्रीके पास पहुंचा देते थे।

राजपुरुषोंके सम्मानमें विशेष समारोह करनेका इंग्लैंडमें रिवाज चला आता है। उसके अनुसार भारतसे आये हुए प्रतिनिधियोंके सम्मानमें बकिंघम महलमें एक समारोह रखनेका ब्रिटिश सरकार विचार कर रही थी। उसका खयाल था की इस बहाने राजा जॉर्जको भी भारतके राजपुरुषोंसे मुलाकात करनेका मौका मिलेगा। परन्तु भारत-मंत्री और इंग्लैंडके कुछ राजनीतिज्ञोंके मनमें यह शंका थी कि साधुवृत्तिवाले



गांधीजी इस समारोहमें आना मंजूर करेंगे या नहीं ? और उन्होंने मंजूर भी कर लिया तो राजा जॉर्ज 'विद्रोही गांधी' से मिलना पसन्द करेंगे या नहीं ? इस दोहरी परेशानीका हल निकालनेके लिए गांधीजी और राजा जॉर्ज दोनोंके विचार जाननेके प्रयत्न किये जाने लगे ।

भारत-मंत्री राजासे मिलने गये । गांधीजीको महलमें बुलानेकी बात सुनकर राजाके मुंहसे ये शब्द निकल पड़े, "यह आप क्या कहते हैं ? जिस 'विद्रोही गांधी' ने ब्रिटिश साम्राज्यके मेरे वफादार अधिकारियों पर बरसों तक कड़े प्रहार किये हैं, उसे आप शाही महलमें लायेंगे ?"

गांधीजी जैसा 'विद्रोही आदमी' शाही महलमें राज्यका मेहमान बनकर आयेंगा, इसकी राजाने स्वप्नमें भी कल्पना नहीं की थी । इस विचारसे ही वे चिढ़ गये । लेकिन कर क्या सकते थे ? आखिर तो वे इंग्लैंडके वैधानिक राजा ही थे । इसलिए ब्रिटिश मंत्रि-मण्डल द्वारा तय की हुई नीतिका अनुसरण किये सिवा कोई चारा उनके सामने नहीं था । अन्तमें गांधीजीको निमंत्रण देनेकी बात राजाने मान ली । बादमें समारोहकी व्यवस्थाके बारेमें भी कुछ बातें हुई । परन्तु राजाके दिलमें गुस्सेकी आग वैसी ही जल रही थी । मुलाकातके अन्तमें वे झुंझलाये : "वह अधनंगा, खुले पावंवाला, मामूली आदमी इस शाही महलमें आयेगा !"

गांधीजीको निमंत्रण तो भेजा गया, लेकिन उन्हें समारोहके लिए निश्चित की गयी कोट-पतलूनकी पोशाक पहन कर आनेकी सूचना की गयी । गांधीजी भला यह सूचना कैसे मानते ? वे भी तो करोड़ों दीन-दलित लोगोंकी बिना ताजके हृदय-सम्राट ही थे न ? उन्होंने ऐसी पोशाक पहन कर समारोहमें जानेसे इनकार कर दिया । अब नयी मुसीबत खड़ी हुई । समारोहके संचालक सोचने लगे कि जिस समारोहमें गांधीजी न आयें उसका कोई मूल्य नहीं, इसलिए गांधीजीको तो उसमें हाजिर रहना ही चाहिये । परन्तु राजाको जिस तरह समझा लिया गया, उसी तरह गांधीजीको समझाना कठिन था । अन्तमें यह समझौता हुआ कि गांधीजी अपनी हमेशाकी पोशाकमें आ सकते हैं ।

गांधीजी बादशाही शान-शौकत और वैभवसे चौंधियानेवाले नहीं थे । उन्होंने अपना सदाका दुशाला भी नहीं बदला ! हमेशाकी तरह घुटनों तकका कच्छ और पांवमें चप्पल पहन कर ही उन्होंने शाही महलमें प्रवेश किया । आज शाही महलमें प्रवेश करनेकी सदियों पुरानी प्रथा टूट रही थी । और इंग्लैंडके सुप्रसिद्ध राजपुरुष तथा बादशाह उसे टूटते देख रहे थे !

राजा जॉर्ज और गांधीजीको मिलानेका काम भी भारत-मंत्रीको ही करना था । लेकिन उनके मनमें एक तरहकी घबराहट थी । राजाके मनसे यह चीज बिलकुल निकलती नहीं थी कि भारतमें सविनय कानून-भंग आन्दोलन और राजद्रोही प्रवृत्तियोंके लिए यह गांधी ही जिम्मेदार है । इसलिए भारत-मंत्री



इसी परेशानीमें पड़े हुए थे कि मुलाकातके समय राजा गांधीजीके साथकी बातचीतमें न मालूम कैसा रुख अपनायेंगे, और राजा कोई अनुचित बात बोल गये तो गांधीजी पर उसकी न जाने कैसी प्रतिक्रिया होगी।

अब राजासे मेहमानोंका परिचय करानेकी विधिका समय आया। मेहमानोंमें गांधीजीको खोज निकालना कठिन नहीं था, क्योंकि उनकी विशेष पोशाकसे कोई भी उन्हें पहचान सकता था। जब भारत-मंत्रीने दोनोंका परिचय करा दिया, तो कुछ औपचारिक बातोंके बाद राजा बोले – मैं दक्षिण अफ्रीका आया था तब हम लोग मिले थे।

गांधीजी – जी हां।

राजा – उस समय और उसके बाद १९१८ तक आप बहुत अच्छे आदमी थे। लेकिन बादमें आपका दिमाग फिर गया।

भारत-मंत्री राजाके ये वचन सुन कर घबरा उठे। जिस डरकी उन्होंने कल्पना की थी वह क्या सच साबित होगा? परन्तु गांधीजी तो शिष्टता और नम्रताकी जीती-जागती मूर्ति थे। उन्होंने राजाकी इस बातका कोई जवाब नहीं दिया; केवल 'गौरवपूर्ण मौन' धारण कर लिया।

राजा – आपने मेरे शाहजादेका बहिष्कार क्यों किया था?

गांधीजी – मैंने आपके शाहजादेका बहिष्कार नहीं किया, बल्कि ब्रिटिश ताजके सरकार द्वारा नियुक्त प्रतिनिधिका बहिष्कार किया था।

फिर दोनों कुछ औपचारिक बातोंकी ओर मुड़े। परन्तु राजा थोड़ी थोड़ी देरके बाद गांधीजीके खुले घुटनोंकी तरफ क्रोधभरी आंखोंसे देख लिया करते थे।

समयकी कैसी बलिहारी है! यह अधनंगा फकीर करोड़ों भारतीयोंका प्रतिनिधि बनकर जब दिल्लीमें वाईसरॉयके महलमें उनके साथ समान भूमिका पर बातें करने गया था, तब मि. चर्चिल जैसे साम्राज्यवादीको बहुत बुरा लगा था। आज वही अधनंगा फकीर साम्राज्यके शाही महलमें अपनी हमेशाकी पोशाकमें ही बादशाहके साथ बैठकर बातें कर रहा था!

अन्तमें बिदाईका समय हुआ। दोनोंने आखिरी बार हाथ मिलाया। परन्तु राजासे रहा न गया। विद्रोही मेहमानको दो शब्द चेतावनीके कहना वे अपना पवित्र कर्तव्य समझते थे। इसलिए वे बोले :



“मि. गांधी, एक बात याद रखिये | आजसे आप मेरे साम्राज्य पर प्रहार करना बन्द कर दीजिये | किसी भी देशमें होनेवाला बलवा बरदाश्त नहीं किया जा सकता | उसे दबाकर सरकारका तंत्र चालू रखना ही होगा |”

राजाके ये अंतिम वचन सुनकर भारत-मंत्रीका दिल धड़कने लगा | अरे, राजाने बड़ी बेढंगी और अशिष्ट बातें कह डालीं | अब यदि गांधी भी ऐसी ही बेढंगी और अशिष्ट बातें कहें तो क्या नतीजा होगा?

राजाके ऐसे घमंडसे भरे वचन सुनकर चुप कैसे रहा जा सकता था ? अतः सज्जनता और नम्रताके अवतार गांधीजी अपने ‘लाक्षणिक विवेक’ का पालन करते हुए भी दृढ़तासे बोले :

“आप यह आशा तो नहीं रखते होंगे कि आपके मेहमानके नाते मैं राजनीतिक प्रश्न पर आपसे दलील करूं |”

गांधीजीके ये नम्रताभरे शब्द सुनकर भारत-मंत्रीका हृदय आनन्दसे नाच उठा | उनके हृदयमें गांधीजीके लिए धन्यवाद और प्रशंसाके शाद गूंज उठे :

“अहा ! इस अकिंचन माने जानेवाले पुरुषमें कुलीन लोगोंको शोभा देनेवाली कैसी सुन्दर सज्जनता और सभ्यता है !”

गांधीजीके सम्पर्कमें आनेवाला प्रत्येक व्यक्ति, भले वह उनके विचारोंसे सहमत हो या न हो, उनकी सभ्यता, उनके व्यवहार और उनके तेजस्वी व्यक्तित्वसे प्रभावित हुए बिना नहीं रहता था |



जमानत – जायदादकी या सद्भावकी?

यह उन दिनोंकी बात है, जब गांधीजी दक्षिण अफ्रीकामें वकालत करते थे। उस समय दुनिया उन्हें दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहके वीर जन्मदाताके रूपमें नहीं पहचानती थी। परन्तु वहांके भारतियोंमें एक सत्यनिष्ठ वकीलके रूपमें उनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी।

एक दिन एक मुवक्किल गांधीजीके आफिसमें आया। प्रिटोरिया शहरमें उसकी मालिकीकी एक जमीन थी। शहरके बीचमें होनेके कारण मकान बनवानेकी दृष्टिसे वह बहुत कीमती और उपयोगी थी। गांधीजीके साथी और भक्त मि. कैलनबेक उस जमीन पर मकान बनवाना चाहते थे। इस सम्बन्धमें उस मुवक्किलने गांधीजीसे एक दस्तावेज तैयार करवाया था। उस दस्तावेजकी शर्तके मुताबिक मि. कैलनबेकका मकान बीस बरस बाद मालिकी हकके आधार पर मुवक्किलको मिलनेवाला था।

वह मुवक्किल बड़ा मशहूर आदमी था। प्रिटोरिया शहरमें एक सत्यप्रिय और कभी कोई बुरा काम न करनेवाले व्यक्तिके नाते उसकी प्रतिष्ठा थी। गांधीजीने मि. कैलनबेकको यह विश्वास दिलाया था कि वह भाई दस्तावेजकी रजिस्ट्री करा देगा। इस विश्वास पर मि. कैलनबेकने उस जमीन पर १४००० पाउन्डका मकान बनवाना शुरू कर दिया। देखते देखते कई दिन और कई महीने बीत गये। लेकिन गांधीजीके मुवक्किलने दस्तावेजकी रजिस्ट्री नहीं करायी। मकान बनानेवालेका बिल चढ़ता जाता था। लेकिन बिलके पैसे कौन चुकावे? कैलनबेकके सॉलीसीटरने उन्हें सलाह दी कि गांधीजीके मुवक्किल पर मुकदमा दायर करना चाहिये। इसके सिवा दूसरा कोई रास्ता नहीं है।

यह घटना हुई उन दिनों मि. कैलनबेक गांधीजीके भक्त नहीं बने थे। अभी दोनोंके परिचयका आरम्भ ही था। परन्तु गांधीजीकी सरलता और हृदयकी शुद्धताकी उन पर गहरी छाप पड़ी थी। उन्होंने सोचा कि मुकदमा दायर करनेसे पहले गांधीजीसे मिल लेना चाहिये, जिससे इस उलझी हुई परिस्थितिमें से कोई रास्ता निकल सके।

गांधीजी स्वयं भी बैरिस्टर थे। विश्वासघात या कानून तोड़नेके प्रश्न पर न्यायकी अदालतमें जाने लायक मामला होने पर भी कानूनका सहारा ठीक न लगा। मि. कैलनबेककी सारी बातें सुन लेनेके बाद मकान बनानेवालेके चढ़े हुए बिलके पैसे चुकानेके लिए १५०० पाउन्ड (रु. १९८३५/-) का चैक गांधीजीने उनके हाथमें रख दिया !



मि. कैलनबेक जर्मन यहूदी थे | पैसेके लेन-देनके मामलेमें बड़े होशियार और लाभ-हानिका विचार करनेवाले थे | उन्हें कल्पना भी नहीं थी कि अपने मुक्किलकी साख पर गांधीजी स्वयं ऐसा कदम उठा लेंगे | वे चैक लेनेमें क्षणभर हिचकिचाये और बोल उठे :

“अजी, गांधी भाई, यह आप क्या करते हैं ? आपके पास जमानत कहां है ? जमानतके बिना आप इतनी बड़ी रकम मुझे कैसे दे सकते हैं ?”

गांधीजी – मैंने जो कदम उठाया है, वह बिलकुल ठीक है |

गांधीजीका चैक देनेका निश्चय अडिग था |

कानून द्वारा खड़ी की हुई जायदादकी जमानतके बजाय मनुष्यकी भलाई और मानवमात्रमें रहे सद्भावकी जमानत पर गांधीजीका अधिक अचल विश्वास था | और इस विश्वास पर ही गांधीजीने अपना सारा जीवन बिताया था, फिर वह वकीलके रूपमें हो या राष्ट्रके एक नेताके रूपमें |

गांधीजीके इस कदमसे मि. कैलनबेकका यहूदीपन मिट गया और वे गांधीजीके साथ जीवन भरके लिए स्नेहके नाजुक धागेमें बंध गये !



८

ये पैसे मेरे हैं !

१९४२ के 'भारत छोड़ो' आन्दोलनके समय ब्रिटिश सरकारने गांधीजीको यरवडाके पास आगाखान महलमें नजरकैद रखा था। उस महलमें नये ढंगकी सारी सुविधायें मौजूद थीं। उसका बगीचा तो आज भी उतना ही प्रशंसाका पात्र है। महलके अहातेकी दीवालोंने पर बांसके टट्टे न लगा दिये गये होते, तो रास्ते पर चलनेवाले आदमी भी गांधीजीको बगीचेमें घूमते देख सखते थे। उस महलके विशाल मैदानके आसपास पुलिसका सख्त पहरा बैठा दिया गया था।

सुविधाओंकी दृष्टिसे देखा जाय तो गुनहगार कैदियोंके लिए बनाये हुए जेलके बनिस्बत यह महल कहीं आगे बढ़ा हुआ था। परन्तु गांधीजीको उस महलमें रहना खटकता था। उस महलके भाड़े तथा उसकी रक्षाके लिए प्रतिदिन सैकड़ों रूपये खर्च होते थे। इससे गांधीजीको बड़ा दुःख होता था। उनका दिल हमेशा यही रट लगाये रहता था कि उन्हें किसी मामूली जेलमें रख दिया जाय तो अच्छा।

परन्तु सरकार उस समय किसीकी बात सुननेको तैयार नहीं थी। कोई कोई अधिकारी यह दलील करते थे कि पुलिसके पीछे सैकड़ों रूपये खर्च होते हैं, इसमें गांधीका क्या जाता है? रूपये उन्हें थोड़े ही खर्च करने पड़ते हैं? सरकार खर्च करती है। फिर उन्हें इसकी चिन्ता क्यों?

गांधीजी जवाबमें कहते : "लेकिन इससे क्या? जो पैसे खर्च होते हैं, वे क्या अंग्रेजोंके पैसे हैं? वे पैसे तो मेरे हैं, भारतकी गरीब जनताके हैं। पुलिसका इतना बड़ा पहरा सरकार किसलिए रखती है? वह इतना तो जानती ही है कि मैं यहांसे कभी भागनेवाले नहीं हूँ।"

सरकारी पैसेके खर्चके बारेमें गांधीजीकी यह दृष्टि थी। सरकारी पैसेका थोड़ा भी दुर्व्यय न हो, इसकी चिन्ता और सावधानी शासकोंको तो रखनी ही चाहिये। परन्तु देशके नागरिकोंके नाते हमें भी इस बातकी उतनी ही सावधानी रखनी चाहिये कि सरकारी खजानेकी एक भी पाई नाजायज तौर पर खर्च न हो। इस बातका ध्यान रखा जाय तो सरकारी मिल्कियतके होनेवाले नुकसानसे, उसकी चोरीसे और पैसेके नाजायज खर्चसे हमारा राष्ट्र बच जाय।

* * * * *

